काम और अन्त में इस दुःखालय से पूर्ण मुक्ति का पथ प्रशस्त करके वेद हमें मोक्ष-प्राप्ति का अवसर प्रदान करते हैं। धर्मपथ से अथवा उपरोक्त नाना यज्ञों के द्वारा आर्थिक समस्याओं का अपने-आप समाधान हो जाता है। जनसंख्या में वृद्धि होने पर भी यज्ञ करने से अन्न, दुग्धादि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकते हैं। शरीर के पोषण के बाद स्वभावतः इन्द्रियतृप्ति का स्थान आता है। इसलिए वेदों में संयमित इन्द्रियतृप्ति के लिए धर्मसम्मत विवाह का विधान है। इससे मनुष्य शनैः-शनैः भवबन्धन से मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। जीवन्मुक्ति की परम सिद्धि श्रीभगवान् का संग प्राप्त करने में है। पूर्व कथन के अनुसार, यज्ञ से कृतकृत्यता हो जाती है। इस पर भी यदि कोई वेद के अनुसार यज्ञ नहीं करे तो वह सुखी जीवन की आशा किस प्रकार कर सकता है? विभिन्न स्वर्गीय लोकों में प्राकृत सुख के अलग-अलग स्तर हैं। अतः सभी दृष्टियों से यज्ञ करने वाले को प्रचुर सुख की उपलब्धि होती है। परन्तु मानव का सर्वोच्च सुख तो कृष्णभावनामृत के अभ्यास द्वारा भगवद्धाम को प्राप्त कर लेना है। जीवन के कृष्णभावनाभावित हो जाने से भवसागर के सम्पूर्ण दुःख दूर हो जाते हैं।

6/4

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे।।३२।।

एवम्=इस प्रकार; **बहुविधाः**=नाना प्रकार के; **यज्ञाः**=यज्ञ; **विततः**=विस्तृत हुए हैं; **ब्रह्मणः**=वेदों के; **मुखे**=मुख में; **कर्मजान्**=कर्मजन्य; **विद्धि**=जान; **तान्**=उन; **सर्वान्**=सभी को; **एवम्**=इस प्रकार; **ज्ञात्वा**=जानकर; **विमोक्ष्यसे**=मुक्त हो जायगा।

अनुवाद

वेदों में वर्णित इन सभी यज्ञों को कर्म से उत्पन्न जान। इस प्रकार यज्ञतत्त्व को जान कर तू संसार से मुक्त हो जायगा।।३२।।

तात्पर्य

पूर्व कथन के अनुसार, वेदों में कर्ताभेद के अनुसार भिन्न-भिन्न यज्ञों का विधान है। अधिकांश मनुष्य प्रायः देहात्मबुद्धि में डूबे जा रहे हैं। अतएव यज्ञों की व्यवस्था इस प्रकार की गयी है कि मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार देह, मन अथवा बुद्धिके द्वारा उनका अनुष्ठान कर सकें। परन्तु इन सब का अन्तिम लक्ष्य देह से मुक्त कराना है। यहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं श्रीमुखवचन से यह प्रमाणित किया है।

7/4

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।।३३।।

श्रेयान्=श्रेष्ठ है; **द्रव्यमयात् यज्ञात्**=द्रव्यमय यज्ञ से; **ज्ञानयज्ञः**=ज्ञानयज्ञ; **परंतप**=हे शत्रु-विजयी अर्जुन; **सर्वम्**=समूचे; **कर्म**=कर्म; **अखिलम्**=पूर्णरूप से; **पार्थ**=हे कुन्तीपुत्र; **ज्ञाने**=ज्ञान में; **परिसमाप्यते**=पर्यवसान को प्राप्त होते हैं।